"आज़ाद की हिम्मत की कहानी"

"हम भी आज़ाद जी की तरह निडर और ईमानदार बनें।"

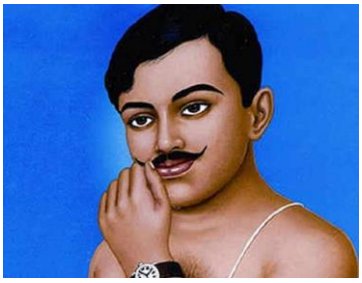

साहस और सच्चाई से बड़ी से बड़ी मुश्किल को जीता जा सकता है।

बहुत समय पहले, जब हमारा देश अंग्रेज़ों के अधीन था, तब भारत को आज़ाद कराने के लिए कई वीर सपूत खड़े हुए। उन्हीं में से एक थे **चन्द्रशेखर आज़ाद**। उनका जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्य प्रदेश के भाबरा गाँव में हुआ था। बचपन से ही उनमें साहस और निडरता कूट-कूटकर भरी थी। बचपन से ही वे बहुत तेज, बहादुर और निडर थे। एक बार, जब वे केवल 14 साल के थे, तो बनारस में उन्हें अंग्रेज़ पुलिस ने पकड़ लिया।

जज ने पूछा –

"तुम्हारा नाम क्या है?"

उन्होंने बड़ी हिम्मत से कहा – **"मेरा नाम है *आज़ाद*।"**

फिर जज ने पूछा –

"तुम्हारे पिता का नाम?"

उन्होंने उत्तर दिया – **"स्वाधीनता।"**

और जब जज ने गुस्से में कहा –

"तुम्हारा घर कहाँ है?"

तो आज़ाद मुस्कुराए और बोले – **"जेलखाना।"**

सब लोग हैरान रह गए। उस दिन से उनका नाम पड़ गया **चन्द्रशेखर आज़ाद**।

उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खान जैसे महान क्रांतिकारियों के साथ मिलकर कई क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया, जिनमें **काकोरी कांड** सबसे प्रमुख है।

27 फरवरी 1931 को, आज़ाद इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के अल्फ्रेड पार्क में अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठे थे। तभी पुलिस ने उन्हें घेर लिया। आज़ाद ने बहादुरी से अकेले ही पुलिस का मुकाबला किया। उनके पास सिर्फ एक पिस्तौल थी। उन्होंने पुलिस के कई जवानों को मार गिराया।

जब उनकी पिस्तौल में सिर्फ एक गोली बची, तो उन्होंने सोचा कि वे कभी भी अंग्रेजों के हाथों नहीं पकड़े जाएँगे। उन्होंने वह आखिरी गोली खुद को मार ली। इस तरह, उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और भारत माता के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

उन्होंने अंग्रेज़ों से लड़ाई लड़ी और देश की आज़ादी के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

"Your small contribution can help shape a brighter future for many students. If you find it valuable, consider donating at UPI ID – [redacted] *Every contribution counts. Thank you!"*

- *To Get A Personalized Set Of Worksheet For Child, Please Send 'Hi' On WhatsApp – 7248217332*